नोट -

1. नवीन छात्रों की उच्चारण शुद्धि हेतु अमरकोष पढ़ाएँ (समयानुसार)।
2. वेदमन्त्रों की अक्षुण्ण परम्परा को बनाए रखने हेतु प्रत्येक छात्र का उच्चारण एवं स्वर शुद्ध हो इसका विशेष ध्यान रखते हुए छात्रों को उच्चारण स्थान इत्यादि से परिचित कराये।
3. नवीन छात्रों से उनका गोत्र, शाखा इत्यादि ज्ञात कर उसको स्वशाखाध्ययन कराने का प्रयत्न करें।
4. प्रत्येक वर्ष के पाठ्यक्रम का गुरुमुख से सम्पूर्ण अध्यापन एवं स्वाध्याय पूर्वक कण्ठस्थीकरण उसी वर्ष में पूर्ण करना अनिवार्य है।
5. छात्रों को परम्परागत सस्वर अध्ययन पद्धति से ही वेद अध्यापन कराना अनिवार्य है। जैसे -

   16 सन्था पद्धति

   अथवा

   10 पाठ

   10 वल्लि/दशावृत्ति/सन्था
6. प्रत्येक माह के अन्त में (पढाये गए विषयों की) मासिक परीक्षा कर छात्रों के कण्ठस्थीकरण, उच्चारण आदि की स्थिति का अवलोकन करें। यदि न्यूनता हो तो पूर्ण करें।
7. छात्रों की उच्चारण शुद्धि एवं ज्ञानवर्धन के लिए प्रतिदिन प्रातः एवं सायं सन्ध्या के पश्चात् विष्णुसहस्त्रनाम, महिषासुरमर्दिनी स्तोत्रम्, दक्षिणामूर्तिस्तोत्रम्, अन्नपूर्णास्तोत्रम्, भजगोविन्दम्, प्रज्ञाविवर्धनस्तोत्रम्, रामरक्षास्तोत्रम् इत्यादि स्तोत्रों का समयानुसार अभ्यास एवं पाठ करें, जिससे भारतीय परम्परा में श्रद्धा एवं उत्साह बना रहें।
8. गतवर्षों का पाठ्यक्रम छात्र को कण्ठस्थ है या नहीं ज्ञात करने हेतु परीक्षण (Assessment) किया जाएगा।
9. परीक्षक को विगत सभी वर्षों के पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछने का पूर्ण अधिकार होगा।
10. सस्वर वेदाध्ययन करने वालों की संख्या शनैः शनैः क्षीण हो रही है। अतः श्रद्धावान्, मेधावान् एवं दार्ढ्य बुद्धि वाले छात्रों की वेदाध्ययन में रुचि उत्पन्न करने हेतु आवश्यक प्रयत्न करना।

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)

कृष्णयजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा पाठ्यक्रम

वेदविभूषण प्रथमवर्ष (उत्तरमध्यमा प्रथमवर्ष / कक्षा XI समकक्ष)					
द्वितीयकाण्ड सम्पूर्ण । पञ्चमकाण्ड सम्पूर्ण ।					
क्रमांक	**माह / पक्ष**	**पाठ्यक्रम बिन्दु**	**पञ्चाशत् संख्या**	**अंक**	**अध्ययन-अध्यापन**
1		द्वितीयकाण्ड - प्रथम प्रश्न		5	1. प्रत्येक पक्ष में निर्धारित मन्त्र भाग की 10 पाठ एवं 10 सन्था (दशावृत्ति) करना है। 2. नवम तथा दशम पाठ में सम्पूर्ण पञ्चाशत् पढाना है 3. छः सन्था होने के पश्चात् छात्र गुरुजी को कण्ठस्थ सुना ने प्रयत्न करें। 4. प्रतिदिन प्रातः काल ब्रह्मयज्ञ में 100 पञ्चाशत् बिना पुस्तक के बोलना। 5. जिन पञ्चाशतों को अगले दिन ब्रह्मयज्ञ में कण्ठस्थ बोलना है एक दिन पूर्व उनका स्वाध्याय करें। 6. नूतनपाठ (जिसकी सन्था (दशावृत्ति) पूरी हुई हो। की प्रतिदिन 2 आवृत्ति करना अनिवार्य है। एक पक्ष तक। 7. प्रत्येक पक्ष की त्रयोदशी तथा चतुर्दशी को उस पक्ष के ब्रह्म यज्ञ में स्वाध्याय किए गए पञ्चाशतों की सामूहिक आवृत्ति अनिवार्यतया करनी है।
	प्रथम पक्ष	* वायव्यꣳश्वेतम् से वषट्कारो वै	40		
	द्वितीय पक्ष	* वषट्कारो वै से प्रश्नान्त तथा-			
2		द्वितीयकाण्ड - द्वितीय प्रश्न		10	
		- अग्नयेन्नवते पुरोडाशम् पर्यन्त	39		
	तृतीय पक्ष	* अग्नयेन्नवते पुरोडाशम् से असावादित्यो न	38		
	चतुर्थ पक्ष	* असावादित्यो न से प्रश्नान्त तथा-			
3		द्वितीयकाण्ड - तृतीय प्रश्न		10	
		- अर्यम्णे चरुम् पर्यन्त	38		
	पञ्चम पक्ष	* अर्यम्णे चरुम् से प्रश्नान्त पर्यन्त	37		
4		द्वितीयकाण्ड - चतुर्थ प्रश्न		5	
	षष्ठ पक्ष	* देवा मनुष्याः से देवा वै राजन्यात्	42		
	सप्तम पक्ष	* देवा वै राजन्यात् से प्रश्नान्त तथा-			
5		द्वितीयकाण्ड - पञ्चम प्रश्न		10	
		- एष वै देवरथः पर्यन्त	38		
	अष्टम पक्ष	* एष वै देवरथः से प्रश्नान्त पर्यन्त	42		
6		द्वितीयकाण्ड - षष्ठ प्रश्न		10	
	नवम पक्ष	* समिधो यजति से मनुः पृथिव्याः	35		
	दशम पक्ष	* मनुः पृथिव्याः से प्रश्नान्त पर्यन्त	35		

7		पञ्चमकाण्ड - प्रथम प्रश्न		5	
	एकादश पक्ष	* सावित्राणि जुहोति से एकवि ँ शत्या माषैः	38		
	द्वादश पक्ष	* एकवि ँ शत्या माषैः से प्रश्नान्त तथा-			
8		पञ्चमकाण्ड - द्वितीय प्रश्न		10	
		- व वा एतौ पर्यन्त	41		
	त्रयोदश पक्ष	* वि वा पतौ से गायत्री त्रिष्टुप्	40		
	चतुर्दश पक्ष	* गायत्री त्रिष्टुप् से प्रश्नान्त तथा-			
9		पञ्चमकाण्ड - तृतीय प्रश्न		5	
		- धन्दा ँ स्युपदधाति पर्यन्त	38		
	पञ्चदश पक्ष	* धन्दा ँ स्युपदधाति से प्रश्नान्त तथा-			
10		पञ्चमकाण्ड - चतुर्थ प्रश्न		5	
		- उदेनमुत्तराम् पर्यन्त	37		
	षोडश पक्ष	* उदेनमुत्तराम् से प्रश्नान्त तथा-			
11		पञ्चमकाण्ड - पञ्चम प्रश्न		10	
		- प्रजापतिः प्रजास्सृष्ट्वा पर्यन्त	42		
	सप्तदश पक्ष	* प्रजापतिः प्रजासृष्ट्वा से इन्द्राय राज्ञे	41		
	अष्टादश पक्ष	* इन्द्रायराज्ञे से प्रश्नान्त तथा-			
12		पञ्चमकाण्ड - षष्ठ प्रश्न		5	
		- सुवर्गाय वा एषः पर्यन्त	43		
	नवदश पक्ष	* सुवर्गाय वा एषः से प्रश्नान्त तथा-			
13		पञ्चमकाण्ड - सप्तम प्रश्न		10	
		- यथा वै पुत्रः पर्यन्त	41		
	विंश पक्ष	* यथा वै पुत्रः से प्रश्नान्त पर्यन्त	42		
नोट - कण्ठस्थीकरण, उच्चारण एवं स्वरसंचालन प्रत्येक की 100-100 अंकों की इस प्रकार 300 अंकों की परीक्षा होगी।			787 पञ्चाशत्	100 अंक	

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)

कृष्णयजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा पाठ्यक्रम

वेदविभूषण द्वितीयवर्ष (उत्तरमध्यमा द्वितीयवर्ष / कक्षा XII समकक्ष)					
षष्ठकाण्ड सम्पूर्ण । सप्तमकाण्ड सम्पूर्ण । श्रीरुद्रप्रश्न (पदपाठ - क्रमपाठ)					
क्रमांक	**माह / पक्ष**	**पाठ्यक्रम बिन्दु**	**पञ्चाशत् संख्या**	**अंक**	**अध्ययन-अध्यापन**
1		षष्ठकाण्ड - प्रथम प्रश्न		10	1. प्रत्येक पक्ष में निर्धारित मन्त्र भाग की 10 पाठ एवं 10 सन्था (दशावृत्ति) करना है। 2. नवम तथा दशम पाठ में सम्पूर्ण पञ्चाशत् पढाना है 3. छः सन्था होने के पश्चात् छात्र गुरुजी को कण्ठस्थ सुना ने प्रयत्न करें। 4. प्रतिदिन प्रातः काल ब्रह्मयज्ञ में 100 पञ्चाशत् बिना पुस्तक के बोलना। 5. जिन पञ्चाशतों को अगले दिन ब्रह्मयज्ञ में कण्ठस्थ बोलना है एक दिन पूर्व उनका स्वाध्याय करें। 6. नूतनपाठ (जिसकी सन्था (दशावृत्ति) पूरी हुई हो। की प्रतिदिन 2 आवृत्ति करना अनिवार्य है। एक पक्ष तक। 7. प्रत्येक पक्ष की त्रयोदशी तथा चतुर्दशी को उस पक्ष के ब्रह्म यज्ञ में स्वाध्याय किए गए पञ्चाशतों की सामूहिक आवृत्ति अनिवार्यतया करनी है।
	प्रथम पक्ष	*प्राचीनव꣡ꣳशङ्करोति से कद्रूश्च वै	38		
	द्वितीय पक्ष	* कद्रूश्च वै से प्रश्नान्त पर्यन्त	38		
2		षष्ठकाण्ड - द्वितीय प्रश्न		5	
	तृतीय पक्ष	* यदुभौ विमुच्य से सोत्तरवेदिरब्रवीत्	38		
	चतुर्थ पक्ष	* सोत्तरवेदिरब्रवीत् से प्रश्नान्त तथा-			
3		षष्ठकाण्ड - तृतीय प्रश्न		10	
		- पृथिव्यै त्वाऽन्तरिक्षय पर्यन्त	39		
	पञ्चम पक्ष	* पृथिव्यै त्वाऽन्तरिक्षाय से मेदसास्स्रुचौ	38		
	षष्ठ पक्ष	* मेदसा स्रुचौ प्र से प्रश्नान्त तथा-			
4		षष्ठकाण्ड - चतुर्थ प्रश्न		5	
		- वाग्वा एषा पर्यन्त	36		
	सप्तम पक्ष	* वाग्वा एषा से प्रश्नान्त तथा-			
5		षष्ठकाण्ड - पञ्चम प्रश्न		5	
		- इन्द्रो मरुद्भिः पर्यन्त	35		
	अष्टम पक्ष	* इन्द्रो मरुद्भिः से प्रश्नान्त तथा-			
6		षष्ठकाण्ड - षष्ठ प्रश्न		10	
		- अवभृथयजू꣡ꣳषि पर्यन्त	36		
	नवम पक्ष	* अवमृथयजू꣡ꣳषि से प्रश्नान्त पर्यन्त	35		
7		सप्तमकाण्ड - प्रथम प्रश्न		5	
	दशम पक्ष	* प्रजननज्योतिः से देवस्य त्वा	39		

	एकादश पक्ष	* देवस्यत्वा सवितुः से प्रश्नान्त तथा-			
8		सप्तकाण्ड - द्वितीय प्रश्न		5	
		- ऋतवो वै प्रजाकामाः पर्यन्त	31		
	द्वादश पक्ष	* ऋतवो वै प्रजाकामाः से प्रश्नान्त तथा-			
9		सप्तमकाण्ड - तृतीय प्रश्न		10	
		- एष वा आप्तः पर्यन्त	38		
	त्रयोदश पक्ष	* एषः वा आप्तः से प्रश्नान्त पर्यन्त	36		
10		सप्तमकाण्ड - चतुर्थ प्रश्न		5	
	चतुर्दश पक्ष	* बृहस्पतिरकामयत से मेषस्त्वा पचतैः	37		
	पञ्चदश पक्ष	* मेषस्त्वा पचतैः से प्रश्नान्त तथा-			
11		सप्तमकाण्ड - पञ्चम प्रश्न		10	
		- देवानाँवा अन्तम् पर्यन्त	38		
	षोडश पक्ष	* देवानाँवा अन्तम् से प्रश्नान्त पर्यन्त	32		
12		श्रीरुद्रप्रश्न (पदपाठ)		10	
	सप्तदश पक्ष	* नमस्ते रुद्र से नमो दुन्दुभ्याय च	13		
	अष्टादश पक्ष	* नमो दुन्दुभ्याय च से प्रश्नान्त पर्यन्त	15		
13		श्रीरुद्रप्रश्न (क्रमपाठ)		10	
	नवदश पक्ष	* नमस्ते रुद्र से नमस्सहमानाय	6		
		* नमस्सहमानाय से नमो ज्येष्ठाय च	6		
	विंश पक्ष	* नमो ज्येष्ठाय च से द्रापे अन्धसस्पते	7		
		* द्रापे अन्धसस्पते से प्रश्नान्त पर्यन्त	7		
नोट - कण्ठस्थीकरण, उच्चारण एवं स्वरसंचालन प्रत्येक की 100-100 अंकों की इस प्रकार 300 अंकों की परीक्षा होगी।			584 पञ्चाशत्	100 अंक	